



Original Article

२१ वीं सदी के हिन्दी उपन्यास साहित्य में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ

प्रा. जयसिंग गोवर्धन चवरे

सहायक प्राध्यापक

कला व विज्ञान महाविद्यालय, सावर्डे ता. चिपळूण जि. रत्नागिरी

Manuscript ID:

IJAAR-C130316

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 74 - 78

Submitted: 18 Jan.2026

Revised: 24 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. जयसिंग गोवर्धन चवरे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785443

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785443>



Creative Commons



सार:

२१ वीं सदी का हिन्दी उपन्यास साहित्य भारतीय समाज जीवन में तीव्र गति से परिवर्तित सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बदलावों का सशक्त प्रलेख है। इन बदलावों का सिधा प्रभाव पारिवारिक व्यवस्था पर पड़ा हुआ है। प्रस्तुत शोध आलेख में २१ वीं सदी के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों के आधार पर पारिवारिक समस्याओं का विवेचन किया गया है। जिसमें परंपरा और आधुनिकता का संघर्ष, दांपत्य जीवन में तनाव, स्त्री का पारिवारिक अस्तित्व, आर्थिक तनाव, संयुक्त परिवार व्यवस्था का पतन एवं डिजिटल हस्तक्षेप आदि का विश्लेषण किया है। अतः इस अनुसंधान से यह ज्ञात होता है कि समकालीन हिन्दी उपन्यासकारों ने पारिवारिक संरचना को एक आदर्श संस्था न मानते हुए सामाजिक यथार्थ की संघर्षशील घटक के रूप में प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द: पारिवारिक संरचना, प्रलेख, स्त्री-चेतना, सामाजिक यथार्थ, संघर्षशील

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. जयसिंग गोवर्धन चवरे. (2026). २१ वीं सदी के हिन्दी उपन्यास साहित्य में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 74 - 78. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785443>

प्रस्तावना:

भारतीय समाज व्यवस्था की मूलभूत इकाई परिवार है जिसमें व्यक्ति का नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, संस्कार, मूल्यबोध एवं सामाजिक चेतना का पहला संस्कार परिवार में ही होता है।

साहित्य का समाज के साथ अनन्य साधारण संबंध है। साहित्य में समाज की वास्तविकता का यथार्थ चित्रण होता है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। जिसमें उपन्यास विधा में समाज की वास्तविकता का सशक्त रूप में विवेचन मिलता है।



२१वीं सदी में वैश्वीकरण, उदारीकरण, तकनीकी विस्तार, शहरीकरण एवं बदलती जीवन पद्धति ने परिवार व्यवस्था और नाते संबंध में बड़ा परिवर्तन किया है। जिसमें संयुक्त परिवार की संकल्पना को तोड़कर एकल परिवार के प्रति बढ़ता आकर्षण, व्यक्तिवाद और आर्थिक स्थिति ने परिवार व्यवस्था को कमजोर कर दिया है। अतः समकालीन हिन्दी साहित्य में समाज की इस परिवर्तनवादी वृत्ति का संवेदनशील रूप में विवेचन मिलता है। यह शोध आलेख २१ वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में निहित पारिवारिक समस्याओं का मार्मिक ढंग से विवेचन करता है। साथ ही बदलते पारिवारिक मूल्यों में सामाजिक संरचना को कायम रखने दृष्टि प्रदान करता है। जिसमें पारिवारिक संरचना में बदलाव, पीढ़ीगत अंतर, आर्थिक स्थिति का प्रभाव, दम्पत्य जीवन में परिवर्तन, वृद्धों के प्रति उपेक्षा भाव, लिव-इन रिलेशनशिप और नए पारिवारिक प्रतिमान, नैतिक मूल्यों में बदलाव आदि के द्वारा पारिवारिक समस्याओं को मानवतावादी दृष्टि से प्रस्तुत किया है।

पारिवारिक संरचना में बदलाव:

२१ वी सदी के साहित्य में पारिवारिक संरचना में बड़ा परिवर्तन मिलता है। जिसमें संयुक्त परिवार की पद्धति का विघटन और एकल परिवार का उदय माना जाता है। वैश्वीकरण, उदारीकरण, तकनीकी विस्तार, शहरीकरण एवं बदलती जीवन पद्धति आदि ने परंपरागत पारिवारिक जीवन पद्धति के स्वरूप को कमजोर कर दिया है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में यह बदलाव सिर्फ सामाजिकता की अपेक्षा भावनात्मक दृष्टि से कमजोर होता हुआ दिखाई देता है।

हिन्दी की महिला उपन्यासकार **अलका सरावगी** के उपन्यास **कलिकथा: वाया बाइपास** में पारिवारिक संरचना के बदलाओं का जीवंत रूप मिलता है। जिसमें संयुक्त परिवार

का विघटन और व्यक्ति केंद्रित जीवन पद्धति का विवेचन किया है। उपन्यास के पात्र अपने जीवन में इतने व्यस्त हैं कि वे अपने पारिवारिक एकता को केवल औपचारिकता की दृष्टि से निभाते हैं। इस संदर्भ में लेखिका लिखती है कि –“परिवार अब साथ रहने की जगह नहीं, साथ निभाने की मजबूरी भर रह गया है।”^१ इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक जीवन में परिवार के साथ रहकर भी भावनात्मक रिश्ते घटते जा रहे हैं।

हिन्दी उपन्यास **पीली छतरी वाली लड़की** के उपन्यासकार उदय प्रकाश ने अपने उपन्यास में महानगरीय जीवन पद्धति में पारिवारिक संरचना के बदलते रूप का विवेचन किया है। जिसमें बढ़ती महत्वाकांक्षा और व्यक्ति की स्वार्थी वृत्ति के कारण परिवार के सदस्य एक दूसरे से अलग होते जा रहे हैं। जिसमें आधुनिक जीवन पद्धति में व्यक्ति को विविध सुविधा तो मिलती है लेकिन मानसिक दृष्टि से मजबूत करने में असफल होता है। हिन्दी का बहुचर्चित उपन्यास **रेत समाधि** में गीतांजलि ने पारिवारिक संरचना में आए हुए बदलाओं का सूक्ष्म विवेचन किया है।

अतः कहना होगा कि २१ वीं सदी के हिन्दी उपन्यास साहित्य में परिवार व्यवस्था में विविध बदलाव आए हैं। वे केवल सामाजिक परिवर्तन में ही नहीं, बल्कि मानवीय भावनाओं का संकट के रूप में दिखाई देता है। संयुक्त परिवार के विभाजन से व्यक्ति स्वतंत्र बन गया है, लेकिन भावनिक रूप से अधिक असुरक्षित एवं अकेला महसूस कर रहा है। यही २१ वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों की प्रमुख चिंता का विषय रहा है।

पीढ़ीगत अंतर:

हिन्दी उपन्यासों में पीढ़ीगत अंतर यह प्रमुख पारिवारिक समस्या के रूप में दिखाई देती है। यह अंतर सिर्फ परंपरा और आधुनिकता तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि



भावनात्मक अभिव्यक्ति के साथ जुड़ा हुआ है। जिसमें बुजुर्ग लोग अपनी अनुभूति, नैतिक मूल्य और स्मृतियों से जीवन की राह पर चलते हैं, जबकि युवा पीढ़ी मुक्तता, स्वनिर्णय और नवीन जीवन-मूल्य को प्रधानता देते हैं। २१ वीं सदी के हिन्दी उपन्यास में यह अंतर अधिक गहरा दिखाई देता है। जिसका प्रधान कारण सामाजिक संक्रमण, वैश्वीकरण, तकनीकी उन्नति, शैक्षिक विस्तार और नवीन सांस्कृतिक चेतना से है।

हिन्दी की महिला उपन्यासकार अलका सरावगी का 'कलिकथा : वाया बाइपास' इस उपन्यास में पीढ़ीगत अंतर का विवेचन मिलता है। जिसमें एक मारवाड़ी परिवार की पाँच पीढ़ियों की कथा को चित्रित किया गया है। उपन्यास में किशोर बाबू परंपरागत विचार धारा के पुरस्कर्ता हैं और उनकी विधवा भाभी आधुनिक विचार धारा को प्रधानता देनेवाली है। किशोर बाबू अपनी विधवा भाभी को सामाजिक रुढ़ि परंपरा को महत्व देकर उन्हें बिना किनार की सफेद साड़ी पहनने को कहते हैं। एक दिन जब भाभी आधुनिक विचार धारा के धरातल पर सफेद साड़ी की अपेक्षा दूसरी साड़ी पहनती है। वह सोचती है कि आज पढ़े लिखे लोगों में खुले विचारधारा को महत्व देने की अपेक्षा यह सफेद साड़ी पहनना उन्हें ठीक नहीं लगता। इसीलिए वह बड़ी प्रसन्न होकर अलग साड़ी पहनकर कमरे से बाहर आती है। उस समय किशोर बाबू उन्हें कहते हैं कि – "तुम्हारा दिमाग क्या अब एकदम ही खराब हो गया है भाभी? उम्र बढ़ने के साथ-साथ आदमी की अक्ल बढ़ती है, पर मुझे लगता है यू.पी. वालों की अक्ल कम होने लगती है। यह क्या इतने चटक-मटक रंग की साड़ी पहनी है। क्या कहेंगे लोग देखकर? कुछ तो मर्यादा रखी होती समाज में।" २ साथ ही गीतांजलि के माई, मृदुला गर्ग का कठगुलाब, संजीव और उदय प्रकाश के उपन्यास साहित्य में पीढ़ीगत अंतर का मार्मिक विवेचन मिलता है।

आर्थिक स्थिति का प्रभाव:

२१ वीं सदी में वैश्वीकरण, उदारीकरण और बाजारवादी अर्थव्यवस्था ने समाज की मूल संरचना को प्रभावित किया है। इस आर्थिक बदलाओं का प्रभाव पारिवारिक जीवन, समाज व्यवस्था एवं मनुष्य की मानसिकता पर दिखाई देता है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में इन आर्थिक बदलाओं को सिर्फ आर्थिक समस्या के रूप में ही नहीं, बल्कि मानवीय संकट के रूप में चित्रित किया है। हिन्दी उपन्यासकार **उदय प्रकाश** का **मोहनदास** यह उपन्यास २१वीं सदी की आर्थिक स्थिति की गंभीरता को चित्रित करनेवाला प्रमुख उपन्यास माना जाता है। उपन्यास का पात्र मोहनदास गरीबी के कारण सामाजिक जीवन में विविध समस्याओं का सामना करता है। उसे आर्थिक अभावग्रस्तता के कारण न्याय से वंचित रहना पड़ता है। साथ ही संजीव के उपन्यासों में ग्रामीण और मध्यवर्गीय समाज को आर्थिक दबाव का सामना करना पड़ता है। उनके पात्र मानसिक तनावग्रस्तता में जीवन बिताते हैं। जिसमें पति पत्नी के रिश्तों में तनाव, बच्चों के भविष्य की चिंता और बुजुर्ग लोगों के प्रति उपेक्षा भाव दिखाई देता है। शहरी जीवन में अधिक महत्व आर्थिक स्थिति को दिया जाता है। सभी नाते-रिश्ते पैसे पर आकर समाप्त होते रहे हैं। जिसमें माता-पिता की सेवा के लिए पैसे का विचार किया जा रहा है। हर माता-पिता को लगता है कि उन्हें बुढ़ापे में उनके बच्चों द्वारा हमदर्दी मिले। लेकिन उनकी उपेक्षा होती रहती है। इस संदर्भ में **रवींद्र वर्मा** 'दस बरस के भंवर' में लिखते हैं कि – "यह सच है कि बाँके बिहारी दस बरस इसी झीलमिल भरोसे में रहे कि छोटे को उसके तीनों बड़े भाई संभाल लेंगे। भैया अमरीका में था। उसने लिखा था कि पापा मई छोटे को यहाँ बुला तो नहीं सकता, मगर इलाज के लिए डॉलर भेज सकता हूँ। डॉलर से क्या नहीं हो सकता पापा?" ३



आर्थिक अभावग्रस्तता के कारण पारिवारिक रिश्तों में दरारे निर्माण होती है। घर की जिम्मेदारी निभाते समय पिताजी व्यवसाय करते हैं। उन्हें अपने बच्चों के लिए, परिवार के लिए समय ही नहीं मिलता। वे हमेशा अपने व्यवसाय में व्यस्त रहते हैं। वह परिवार की जिम्मेदारी अपनी पत्नी पर छोड़ देते हैं। पत्नी भी अपने जिम्मेदारी पटति पर छोड़ती है। इससे परिवार विघटित होने लगता है। जिससे बच्चों के संस्कारों पर बुरा असर पड़ता है। 'कमलिनी कौल' में तृशिता की लालिमा घर से भाग जाती है। तो दोनों पति-पत्नी एक दूसरे पर आरोप करते हैं। उस समय पति अपनी जिम्मेदारी के संदर्भ में कहता है कि - “तू जानती है, मजदूर क्लास में काम लेना आसान नहीं है। उन्हें पीना-पिलाना पड़ता है, या कभी खरीददारों को भी खुश करना पड़ता है। फिर दिन का थका हारा मैं भी पी लेता हूँ तो क्या हुआ? अब यह आदत नहीं छूटने की। बता मैं बच्चों के लिए कहाँ से समय लाऊँ? घर का खर्चा, नौकरों का खर्चा, लड़कियों की शादी का खर्चा सिर पर खड़ा है, मैं अकेला क्या क्या करूँ। हताश स्वर में सेठ ने कहाँ”^४

दाम्पत्य जीवन में परिवर्तन:

भारतीय संस्कृति में विवाह को त्याग और समर्पण पर आधारित सामाजिक संस्था माना गया है। २१वीं सदी में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण दाम्पत्य जीवन में बदलाव आया है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में इस बदलाव को नैतिकता का पतन ही नहीं बल्कि व्यक्ति के अस्तित्व और आत्मसम्मान के रूप में विवेचित किया है। साथ ही दाम्पत्य जीवन में आपसी प्रेम और विश्वास की अपेक्षा तनाव, अविश्वास और संदेह को अधिक महत्व दिया जा रहा है। हिन्दी की महिला उपन्यासकार मृदुला गर्ग का उपन्यास कठगुलाब में दाम्पत्य जीवन में आधुनिक विचार प्रक्रिया को

प्रस्तुत किया है। जिसमें पति और पत्नी के रिश्ते में प्रेम एवं विश्वास की अपेक्षा अहं और आत्मसम्मान अधिक दिखाई देता है। उपन्यास की महिला पात्र पारंपरिक जीवन पद्धति की अपेक्षा आधुनिक जीवन पद्धति को महत्व देती है। वह कहती है- “साथ रहना अब विश्वास का नहीं, स्वयं को खो देने का नाम हो गया है।”^५

‘माई’ इस उपन्यास में गीतांजलि ने दाम्पत्य जीवन का चित्रण करते समय पति-पत्नी के रिश्ते को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। जिसमें बाहरी रूप से दाम्पत्य जीवन ठीक लगता है, किन्तु भीतर से औरत का जीवन त्याग और सहनशीलता से युक्त दिखाई देता है। मैत्रेय पुष्पा के ‘चाक’ उपन्यास में नारी की अधिकार वृत्ति और नारी की विवशता का रूप मिलता है। अतः कहना होगा कि आधुनिक परिवर्तनशील जीवन पद्धति से दाम्पत्य जीवन में बदलाव दिखाई देता है।

लिव-इन रिलेशनशिप और नए पारिवारिक प्रतिमान:

२१ वीं सदी के भारतीय समाज जीवन में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का नया रूप दिखाई देता है। जिसमें पारंपरिक विवाह संस्था के साथ साथ नयी लिव-इन रिलेशनशिप जैसी संकल्पना का जन्म हो रहा है। यह सिर्फ जीवन पद्धति तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि परिवार, निजी स्वातंत्र्य, लैंगिक समानता और मूल्यबोध की नयी परिभाषा विवेचित करता है। हिन्दी उपन्यास में लिव-इन रिलेशनशिप को केवल आदर्शवाद एवं नैतिकता के रूप में ही नहीं, बल्कि मानव जीवन की आवश्यकता, आत्मबोध और सामाजिक द्वंद्व के रूप में प्रस्तुत किया है। महिला रचनाकार मृदुला गर्ग के ‘कठगुलाब’ उपन्यास में पारंपरिक विवाह संस्था की अपेक्षा स्वतंत्र सहजीवन बिताने को महत्व दिया गया है। जिसमें



उपन्यास की नारी पात्र कहती है कि – ‘संबंध तभी सार्थक है, जब उसमें किसी की स्वतंत्रता गिरवी न रखी जाए।’^६

अतः कहना होगा कि स्वतंत्र सहजीवन को उजार किया है | पारिवारिक रिश्ते रक्त संबंधों पर नहीं भावनात्मक साझेदारी पर निर्मित होते हैं।

निष्कर्ष:

21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक जीवन की कई समस्याएं मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत की गई हैं। यह साहित्य परिवार को एक संघर्षशील, परिवर्तनशील और मानवीय संबंधों से बने एक घटक के रूप में चित्रित करता है, न कि एक आदर्श या पूरी तरह से एकल संस्था।

वर्तमान समय में पारिवारिक समस्याओं को मानवतावादी दृष्टिकोण से देखा जाता है, जिसमें पीढ़ीगत अंतर,

आर्थिक स्थिति, दाम्पत्य जीवन में परिवर्तन, वृद्धों की उपेक्षा, लिव-इन रिलेशनशिप और नए पारिवारिक प्रतिमान, नैतिक मूल्यों में बदलाव आदि शामिल हैं। हिन्दी उपन्यास में इन समस्याओं को अधिक महत्व देकर समाज को आत्मचिंतन करने को मजबूर किया गया है।

संदर्भ सूची:

१. अलका सरावगी -कलिकथा: वाया बाइपास, पृ. ११२
२. अलका सरावगी- ‘कलिकथा : वाया बाइपास’ पृ ६१
३. रवींद्र वर्मा ,दस बरस का भँवर , पृ. १२
४. कमलिनी कौल’ तृशिता , पृ ५९
५. गर्ग, मृदुला - ‘कठगुला’ वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९६ , पृ. ६५
६. गर्ग, मृदुला -‘कठगुलाब’ वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९६ , पृ. ६०